5

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ एक अन्वेषणात्मक अध्ययन

संजीव कुमार भारद्वाज*
विश्वास**

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है – इस उद्देश्य को केवल कक्षायी पठन-पाठन से पूरा नहीं किया जा सकता। पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ ही वस्तुतः शिक्षा के इस उद्देश्य को पूरा करने का माध्यम बनती हैं। विद्यार्थियों के लिए जितनी महत्वपूर्ण कक्षायी गतिविधियाँ हैं, उतनी ही कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ भी हैं। रचनावादी शिक्षण शास्त्री विद्यालय में की जाने वाली गतिविधियों में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को भी समान रूप से महत्त्व देते हैं। प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में कराई जाने वाली पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की वास्तविक स्थिति की पड़ताल करने के उद्देश्य से प्रस्तुत लेख की रूपरेखा तैयार की गई है। प्रतिदर्श के रूप में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चार जनपदों के सोलह (प्रत्येक जनपद से चार-चार) प्राथमिक विद्यालयों को चयनित किया गया। उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा जारी वार्षिक कैलेंडर में दी गई पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को विश्लेषण का आधार बनाया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण से इन प्राथमिक विद्यालयों में कराई जाने वाली पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के बारे में कई तथ्य स्पष्ट हुए हैं जिनकी चर्चा इस लेख में की गई है।

शिक्षण शास्त्र के नवीन उपागम रचनावाद का यह मानना है कि विद्यार्थियों के लिए जितना आवश्यक कक्षायी परिवेश है, उतना ही आवश्यक कक्षा से बाहर का वातावरण है। जीन प्याजे का यह मानना था कि आरंभिक स्तर पर विद्यार्थी खेल के मैदान में ज़्यादा सीखते हैं इसलिए वह कक्षा से ज़्यादा खेल के मैदान को महत्वपूर्ण मानते हैं। विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के निर्माण के अवसर खुद करके सीखने में होते हैं। पाठ्यचर्या का प्रगतिशील स्वरूप है — वह करके सीखने पर ज़ोर देता हैं।

* *सहायक आचार्य,* विस्तार शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान
** *सहायक आचार्य,* विस्तार शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान

हारवर्ड गार्डनर (2011) अपनी पुस्तक *मल्टीपल इन्टेलीजेन्स* में कई तरह की बौद्धिक क्षमताओं को मान्यता देते हैं। उनका कहना है कि यदि किसी बालक में गणितीय क्षमता है, तो वह गणितीय बुद्धि के मामले में आगे है। इसी तरह यदि किसी बालक में संगीत की क्षमता है, तो वह भी एक विशेष संदर्भ में बुद्धिमान है। शिक्षण शास्त्र के नवीन एवं प्रगतिशील सिद्धांत इस बात पर ज़ोर देते हैं कि विद्यार्थियों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया केवल कक्षा तक सीमित न रहे बल्कि वह खेल के मैदान, संगीत इत्यादि गतिविधियों को भी अपने-आप में समाहित करे।

खेल के मैदान, संगीत इत्यादि गतिविधियाँ पहले भी पाठ्यचर्या में समाहित थीं पर उन्हें अतिरिक्त गतिविधियों (Extra Curricular Activities) के रूप में माना जाता था। यह शिक्षा की पारंपरिक अवधारणा थी। शिक्षा की नवीन अवधारणा के अनुसार अतिरिक्त गतिविधियाँ वस्तुतः 'अतिरिक्त' नहीं होतीं बल्कि ये ऐसी गतिविधियाँ होती हैं जो पाठ के साथ-साथ चलकर विद्यार्थियों के विकास में सहायक होती हैं। इसलिए इन गतिविधियों को अतिरिक्त गतिविधियों के स्थान पर पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ (Co-curricular Activities) माना जाने लगा है — शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है; इस उद्देश्य को केवल कक्षायी पठन-पाठन से पूरा नहीं किया जा सकता। पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ ही वस्तुतः शिक्षा के इस उद्देश्य को पूरा करने का माध्यम बनती हैं। मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों का यह मानना है कि प्रत्येक बालक विशेष होता है। प्रत्येक बालक में विशेष क्षमताएँ होती हैं। कक्षा में जो विद्यार्थी उचित निष्पादन प्रदर्शित नहीं कर पाते, वे अयोग्य ही हों ऐसा कदापि नहीं है, ऐसा भी हो सकता है कि वे विद्यार्थी किसी और क्षेत्र में अपने सहपाठियों से बेहतर हों। पाठ्यचर्या में पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ सम्मिलित करने का दर्शन वस्तुतः यह है कि विद्यालय में कोई भी विद्यार्थी ऐसा न रहे जिसे स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर न मिला हो। यह देखा गया है कि कई ऐसे विद्यार्थी जो कक्षा में शैक्षिक निष्पादन में निम्न स्तर पर हैं अथवा जो कक्षा में अंत:क्रिया करने में झिझकते हैं, वे किसी पाठ्य-सहगामी क्रिया में अच्छा प्रदर्शन कर जाते हैं और इस प्रक्रिया में उनकी झिझक भी दूर हो जाती है। अब ये विद्यार्थी कक्षा में भी अपने निष्पादन में उन्नत प्रदर्शन करने लगते हैं। इस तरह पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ उनकी शैक्षिक उन्नति में भी सहायक हो जाती हैं।

प्रस्तुत प्रपत्र में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चयनित प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की स्थिति को देखने का प्रयास किया गया है। शोधकर्त्ता ने यह पड़ताल करने का प्रयास किया है कि जैसा कि *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005* अनुशंसित करती है कि पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं, तो क्या सचमुच विद्यालय अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पाठ्य-सहगामी गतिविधियों को पर्याप्त जगह दे पा रहे हैं? इस तथ्य की जाँच के लिए शोधकर्त्ता ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चार जनपदों के सोलह प्राथमिक विद्यालयों (प्रत्येक जनपद में से

चार-चार प्राथमिक विद्यालयों) में जाकर अवलोकन किया। विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों एवं अन्य अध्यापकों का साक्षात्कार लिया गया। आँकड़ों की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों से अनौपचारिक बातचीत भी की गई। दत्त-संकलन करने की इस प्रक्रिया में बेसिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा निर्धारित अकादमिक वार्षिक कार्यक्रम सूची को आधार बनाया गया।

एक शैक्षिक सत्र में बेसिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा निर्धारित पाठ्य-सहगामी गतिविधियों का विवरण

दिनाँक	पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ
11 अप्रैल 2016	प्रेरक व्याख्यान
16 अप्रैल 2016	चित्रकला, पेंटिंग एवं क्ले मॉडलिंग
23 अप्रैल 2016	सुलेख, श्रुतिलेख एवं रंगोली प्रतियोगिता
30 अप्रैल 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव
07 मई 2016	कविता व अंताक्षरी
09 मई 2016	सुलेख, श्रुतिलेख एवं वाचन प्रतियोगिता
14 मई 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव
02 जुलाई 2016	सुलेख, श्रुतिलेख एवं वाचन प्रतियोगिता
09 जुलाई 2016	वृक्षारोपण, वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता
11 जुलाई 2016	प्रेरक व्याख्यान
16 जुलाई 2016	चित्रकला, पेंटिंग एवं क्ले मॉडलिंग
23 जुलाई 2016	सुलेख, श्रुतिलेख एवं रंगोली प्रतियोगिता
30 जुलाई 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव एवं बाल अखबार का विमोचन
06 अगस्त 2016	वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता
15 अगस्त 2016	स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक, खेलकूद एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम
20 अगस्त 2016	निबंध लेखन एवं वाचन प्रतियोगिता
22 अगस्त 2016	प्रेरक व्याख्यान
27 अगस्त 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव
03 सितंबर 2016	निबंध लेखन, वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता
05 सितंबर 2016	शिक्षक दिवस के अवसर पर सुलेख, श्रुतिलेख एवं प्रतियोगिता
12 सितंबर 2016	प्रेरक व्याख्यान
14 सितंबर 2016	हिंदी दिवस के अवसर पर निबंध लेखन एवं वाचन प्रतियोगिता
24 सितंबर 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव तथा हस्तकला, पेपर क्राफ्ट, क्ले मॉडलिंग एवं बाल अखबार
03 अक्तूबर 2016	प्रेरक व्याख्यान
22 अक्तूबर 2016	ब्लॉक स्तरीय कबड्डी, खो-खो, एथलेटिक्स, फुटबाल एवं वालीबॉल प्रतियोगिता
28 अक्तूबर 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव तथा बाल अखबार द्वितीय संस्करण का प्रकाशन
05 नवंबर 2016	पुष्पवाटिका और किचन गार्डन सज्जा
14 नवंबर 2016	बाल दिवस के कार्यक्रम एवं प्रेरक व्याख्यान

दिनाँक	पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ
22, 23 नवंबर 2016	ब्लॉक स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं स्काउट गाइड रैली
26 नवंबर 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव
01 व 02 दिसंबर 2016	जिला स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं स्काउट गाइड रैली
03 दिसंबर 2016	विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन
17 दिसंबर 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव
19 दिसंबर 2016	प्रेरक व्याख्यान
24 दिसंबर 2016	हस्तकला, पेपर क्राफ्ट
31 दिसंबर 2016	विद्यार्थी जन्मोत्सव
07 जनवरी 2017	हिंदी सुलेख, श्रुतिलेख एवं वाचन प्रतियोगिता
10 जनवरी 2017	अँग्रेज़ी सुलेख, श्रुतिलेख एवं वाचन प्रतियोगिता
14 जनवरी 2017	पेपर क्रॉफ्ट, कोलाज निर्माण एवं हस्तकला
16 जनवरी 2017	प्रेरक व्याख्यान
21 जनवरी 2017	एकांकी प्रदर्शन
26 जनवरी 2017	गणतंत्र दिवस के स्तर पर सांस्कृतिक एवं खेलकूद कार्यक्रम
11 फरवरी 2017	सुलेख, श्रुतिलेख, रंगोली प्रतियोगिता
18 फरवरी 2017	निबंध (यात्रा वृत्तांत या जीवन को प्रभावित करने वाली घटना का वर्णन)
25 फरवरी 2017	विद्यार्थी जन्मोत्सव
14 मार्च 2017	प्रेरक व्याख्यान

बेसिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा जारी उपर्युक्त वार्षिक कैलेंडर उन पाठ्य सहगामी क्रियाओं को निरूपित करता है जो एक सत्र में विद्यालय में करवायी जानी है। शोधकर्त्ता ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के आधार पर यह देखने का प्रयास किया कि इस वार्षिक कैलेंडर में दी गई पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ कितनी वैविध्यपूर्ण हैं, क्योंकि पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में जितनी विविधता होगी विद्यार्थियों की विभिन्न दक्षताओं को अभिव्यक्त होने का उतना ही अवसर मिलेगा। उल्लिखित तालिका के गहन विवेचन से यह तथ्य निकलकर आ रहा है कि बेसिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश सभी विद्यार्थियों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने में पूर्णतः सफल नहीं हो पाया।

कक्षा का स्वरूप वैविध्यपूर्ण होता है उसमें सामान्य बच्चों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी होते हैं। शोधकर्त्ता द्वारा विद्यालयों में ऐसे विद्यार्थियों की उपस्थिति पाई गई, जिनमें से कई आंशिक रूप से दृष्टि-बाधित तथा श्रवण-वाक् बाधित थे। इन विद्यार्थियों को सक्रिय करने वाली एक भी गतिविधि विद्यालयों में नहीं कराई गयी। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के दौरान ये विद्यार्थी अलगाव के स्तर पर थे, इन विद्यार्थियों की भूमिका मात्र दूसरों का अनुसरण कर ताली बजाने तक ही सीमित थी। जब शोधकर्त्ता ने अध्यापकों से इस संदर्भ में पूछा तो जवाब मिला कि सत्र में एक दिन विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कार्यक्रम करवाया जाता है। ऐसा इसलिए करवाया जाता है क्योंकि वार्षिक कैलेंडर में ऐसी गतिविधि के लिए बस एक ही दिन अनुशंसित किया गया है। ऐसा नहीं है कि इस एक दिन भी विशेष आवश्यकता वाले

बच्चों के लिए कोई ऐसी गतिविधि हो जिसमें वे सक्रिय रूप में भाग ले पाएँ। विद्यार्थियों से इस संदर्भ में पूछने पर यह तथ्य निकलकर आया कि इस दिन कोई व्याख्यान करवा दिया जाता है जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का ज़िक्र होता है। यह कितना विडंबनापूर्ण है कि हमारी कक्षा का एक समूह ऐसा है जो इस व्यवस्था की वजह से अपने-आपको अलग-थलग एवं हीन भावना से घिरा हुआ मानने लग जाता है।

पर्यावरण संबंधी जागरुकता बढ़ाने पर वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य ज़ोर दे रहा है। उत्तर प्रदेश के इन विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं में *हमारा परिवेश* शीर्षक से पर्यावरण विज्ञान की पुस्तक भी लागू है। इसके बावजूद भी पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की दी गई तालिका में एक भी गतिविधि ऐसी नहीं है जिसका प्रयोजन पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाना हो। वृक्षारोपण संबंधी जो गतिविधि है, वह वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता के साथ एक ही दिन में आयोजित की जाती है और इसीलिए मात्र औपचारिकता बनकर रह जाती है या तो प्रधानाध्यापक या कोई अध्यापक एक पौधा लगा देता है। विद्यार्थियों को तो पता भी नहीं चलता कि आज वृक्षारोपण हुआ है।

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को लेकर कितनी असंवेदनशील है, इसका पता परिषद् द्वारा जारी कैलेंडर में दिए गए निर्देश को पढ़कर जाना जा सकता है। उल्लेखनीय है कि इन निर्देशों को 'विशेष' शीर्षक के रूप में कैलेंडर के अंत में अंकित किया गया है। इसके अनुसार —

1. शैक्षिक कैलेंडर में उल्लिखित गतिविधियों को कार्य दिवसों के यथासंभव अंतिम घंटे में आयोजित किया जाये।
2. प्रेरक व्याख्यान करवाने हेतु स्थानीय स्तर पर उपलब्ध प्रतिष्ठित, संभ्रान्त महानुभाव को आमंत्रित किया जाये।

पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को अंतिम घंटे में आयोजित करवाने के इस विशेष निर्देश की वास्तविकता यह है कि परिषद् पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को महत्वपूर्ण मानती ही नहीं। अंतिम घंटे से आशय यहाँ अंतिम कालांश से है जो अधिकतम चालीस मिनट का होता है। सोचने की बात है कि चालीस मिनट की समयावधि में क्या सचमुच पाठ्य-सहगामी गतिविधि करवायी जा सकती है? प्राथमिक स्तर पर छोटे बच्चों को एकत्रित होने में ही काफ़ी समय व्यतीत हो जाता है। विद्यार्थी पूरे दिन की शैक्षणिक गतिविधियों के बाद शारीरिक एवं मानसिक रूप से बोझिल हो जाते हैं। इसका नज़ारा अंतिम कालांश में उनके बंद होते बस्ते और उनकी शारीरिक भाव-भंगिमाओं में झलक जाता है। हमारे विद्यालय विद्यार्थियों के लिए अभी भी रुचिकर नहीं बन पाये हैं, इसलिए जैसे ही छुट्टी का समय नज़दीक आता है वे ऐसे भागते हैं जैसे किसी कैद से छूटकर भाग रहे हों। इस तरह तो अंतिम कालांश में पाठ्य-सहगामी क्रिया करवाने का निर्देश वस्तुतः पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को ही हतोत्साहित कर देना है।

शोधकर्त्ता ने अधिकतर विद्यालयों के अध्यापकों से साक्षात्कार में यह पाया कि प्रेरक व्याख्यान में प्रेरक

विषय-वस्तु से अधिक ज़ोर आमंत्रित 'प्रतिष्ठित एवं संभ्रान्त' वक्ता के महिमा मंडन पर होता है। यह समझ में नहीं आता कि परिषद् प्रतिष्ठित एवं संभ्रान्त महानुभाव को ज़्यादा महत्वपूर्ण मानती है या प्रेरणास्पद व्यक्तित्व को? अधिकतर विद्यालयों में यह देखने को मिला कि इस गतिविधि के द्वारा या तो प्रधानाध्यापक अपने संबंधों का विस्तार कर रहा है या विद्यालय के लिए अनुदान की व्यवस्था। इस गतिविधि से विद्यार्थियों को कोई लाभ होता नहीं दिखता। जबकि इस तरह की गतिविधि का उपयोग विद्यार्थियों में मूल्यों तथा जीवन कौशल के विकास में किया जा सकता है।

विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों ने अपने साक्षात्कार में ऐसे कई कारकों का उल्लेख किया, जिनकी वजह से भी पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के उचित आयोजन में बाधा आ जाती है। ज़्यादातर विद्यालयों में अध्यापकों की कमी है। विद्यालयों में पाठ्यक्रम पूरा करवाने का दबाव होता है। परिषद् के वार्षिक कैलेंडर में भी शैक्षणिक गतिविधियों पर ही ज़्यादा ज़ोर है। ऐसे में जो अध्यापक हैं, वे शैक्षणिक कार्यों पर ही ज़्यादा ज़ोर देते हैं और पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को किसी खाली समय के लिए छोड़ देते हैं। कई विद्यालय ऐसे भी हैं जहाँ मात्र एक अध्यापक ही पूरे विद्यालय को संचालित कर रहा है। अध्यापकों को शैक्षणिक कार्यों के साथ-साथ कई अतिरिक्त कार्यों को भी करना पड़ता है; जैसे — जनगणना, हाउस-होल्ड सर्वे, समाजवादी पेंशन सर्वेक्षण, मतदान आदि। इन अतिरिक्त ज़िम्मेवारियों का नकारात्मक प्रभाव अध्यापकों के शैक्षणिक कार्यों पर पड़ता है।

साक्षात्कार में यह तथ्य भी निकलकर आया कि विद्यालयों में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के लिए किसी विशेष अनुदान की व्यवस्था नहीं है। सरकारी आँकड़े चाहे कुछ भी हो पर वास्तविकता यह है कि कई विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए खेल का कोई सामान तक नहीं है। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक देने के लिए भी अनुदान की व्यवस्था नहीं है। अध्यापकों को यह शिकायत भी थी कि उन्हें कई तरह के 'लिखित विवरण' भी तैयार करने पड़ते हैं, जिनमें उनका काफ़ी समय चला जाता है।

शिक्षा के रचनावादी विचारकों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास तब ज़्यादा अच्छे से होता है जब वे शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भी भागीदारी करते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में तो ज़ोर इसी तथ्य पर होना चाहिए कि कक्षा गतिविधि-आधारित हो, खेल का मैदान खुद विद्यालय बन जाये और प्रत्येक विद्यार्थी को कुछ न कुछ करने का अवसर मिले। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ न केवल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सवंर्धित करती हैं, बल्कि एक समावेशी शिक्षा व्यवस्था के निर्माण का प्रयास भी करती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इन विद्यालयों में निश्चित ही एक निराशापूर्ण परिदृश्य सामने आता है। इन विद्यालयों में पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ मात्र औपचारिकता बनकर रह जाती हैं। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को अभी भी यहाँ अतिरिक्त क्रियाएँ ही माना जाता है जिनका कोई

खास महत्त्व शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नहीं है। इस निराशापूर्ण स्थिति के लिए बेसिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश की नीतियों के साथ-साथ अन्य कई सारे कारक भी ज़िम्मेदार हैं।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 1993. *लर्निंग विदाउट बर्डन* (रिपोर्ट). एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——— 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——— 2016. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005. आधार पत्र. *करिकुलम, सलेबस एंड टेक्स्ट बुक*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

गार्डनर, हारवर्ड. 2011. *फ्रेम्स ऑफ माइंड — दि थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलीजेंस*. बेसिक बुक्स, यू.एस.ए.

डी.वी., जॉन. 2013. *दि चाइल्ड एंड दि करिकुलम*. डेनटन एंड व्हाइट, यू.एस.ए.

पेगेट, जे. और बी. इनहेल्डर. 1969. दि फिजियोलोजी ऑफ़ दा चाइल्ड. बेसिक बुक्स ग्रुप, यू.एस.ए.

व्योगात्सकी, एल.एस. और वेब्ब. डेविड. 2013. *प्ले एंड इट्स रोल इनदि मेंटल डेवलपमेंट ऑफ दि चाइल्ड* www.allaboutpsychology.com पर ऑनलाइन देखा गया.